318hi28

28

मुद्रा और बैंकिंग

मुद्रा मानव सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण खोज है। मुद्रा के बिना संसार के बारे में सोचना मुश्किल है। दैनिक कार्यकलापों से लेकर भविष्य के लिए बचत करने तक के विभिन्न कार्यों के लिए प्रत्येक व्यक्ति को मुद्रा की आवश्यकता होती है, लेकिन जब आप प्राचीन इतिहास पर दृष्टि डालें तो आप पाएंगे कि मुद्रा के प्रयोग में आने से पहले दैनिक आवश्यकताओं अथवा लेन-देन की सुविधा के लिए वस्तु विनिमय प्रणाली प्रचलित थी। सभ्यता के विकास के साथ वस्तु विनिमय प्रणाली (बार्टर सिस्टम) का लोप हो गया और उसका स्थान मुद्रा ने ले लिया।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप:

- वस्तु विनिमय प्रणाली का अर्थ और सीमाएं जान सकेंगे;
- मुद्रा की आवश्यकता को समझ पाएंगे;
- मुद्रा को परिभाषित कर पाएंगे;
- मुद्रा द्वारा किये जा सकने वाले कार्यों की व्याख्या कर पाएंगे;
- भारत में मुद्रा पूर्ति के विभिन्न स्रोतों को बता सकेंगे;
- उच्च शक्ति मुद्रा की अवधारणा को जान पाएंगे;
- वाणिज्यिक बैंकों का अर्थ और उनके कार्यों की व्याख्या कर पाएंगे;
- साख सृजन प्रक्रिया को समझ पाएंगे;
- केंद्रीय बैंक का अर्थ और उसके कार्यों की व्याख्या कर पाएंगे; तथा
- साख नियंत्रण की विधियों को जान पाएंगे।

28.1 वस्तु विनिमय प्रणाली का असफलता और मुद्रा की आवश्यकता

प्राचीन समय में जब मुद्रा नहीं थी, तब लोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति वस्तुओं के बदले वस्तुओं की अदला-बदली से करते थे। इस व्यवस्था को वस्तु विनिमय प्रणाली कहा जाता था। समय बीतने के साथ इसकी निहित समस्याओं के कारण इस प्रथा को छोड़ना पड़ा। वस्तु विनिमय प्रणाली का कुछ कठिनाइयां निम्न प्रकार हैं–

1. संबंधित व्यक्ति को ढूंढ़ने की लागत : वस्तु विनियम प्रणाली की एक मुख्य कठिनाई यह थी कि संबंधित व्यक्ति को उचित शर्तों पर सामान देने-लेने के लिए ढूंढ़ने में बहुत समय बर्बाद करना पड़ता था। सभ्यता के आरंभ में यातायात और संचार सुविधाएं नहीं थी, इस कारण एक-दूसरे के संपर्क में आना बहुत कठिन था।

2. आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का अभाव : इसका अर्थ यह है कि जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से अपनी वस्तु बदलना चाहता है तो दूसरे व्यक्ति को पहले व्यक्ति की वस्तु लेने को तैयार होना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति गेहूं देकर कपड़ा लेना चाहता है तो दूसरा व्यक्ति ऐसा होना चाहिए, जो कपड़ा देकर गेहूं लेने को तैयार हो। साधारण व्यवहार में ऐसी स्थिति पैदा हो भी सकती है और नहीं भी। यदि कपड़े वाला गेहूं नहीं लेना चाहता है तो गेहूं का कपड़े से विनिमय नहीं हो पाएगा। इस कारण वस्तु विनिमय तभी संभव होगा, जब आवश्यकताओं का दोहरा संयोग होगा, अन्यथा नहीं।

3. वस्तुओं के विभाजन का अभाव : कई वस्तुएं ऐसी होती हैं, जिनको टुकड़ों में विभाजन संभव नहीं होता। माना किसी के पास भैंस है और उसे अनाज की आवश्यकता है तो गेहूं के बदले में कितनी भैंस दी जाए? माप की समान इकाई के अभाव में, वस्तु विनिमय प्रथा के अंतर्गत विभिन्न वस्तुओं को मूलयों बराबर करना बड़ा कठिन था, क्योंकि भैंस को अनेक टुकड़ों में विभाजित नहीं किया जा सकता।

4. माप की सर्वमान्य इकाई का अभाव : पूर्व स्तंभ में दिए गए भैंस पूर्व उदाहरण को लीजिए-यह तय करना कठिन है कि कितनी भैंस के बदले कितना अनाज दिया जाए। यह बड़ा ही भद्दा लगता है। यह इसलिए होता है, क्योंकि भैंस कभी भी मूल्य का सामान्य मापक नहीं हो सकती। यह कठिनाई सभी वस्तुओं का विषय में समान है।

5. भंडारण की समस्या : वस्तु विनिमय प्रणाली की दूसरी समस्या यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने ही सामान का पर्याप्त भंडारण करना पड़ता है, ताकि वह अपने दैनिक कार्यों को चलाने के लिए दूसरे लोगों से उसका विनिमय कर सके। एक किसान का ही उदाहरण लें, जिसने गेहूं का उत्पादन किया है। वह कुछ भाग अपने उपयोग के लिए अपने पास रखेगा, शेष भाग अपनी आवश्यकता की अन्य वस्तुओं का दूसरों से विनिमय के लिए रखेगा। यदि वह फर्नीचर चाहता है तो वह बढ़ई के पास जाएगा, जो फर्नीचर के बदले गेहूं लेने को तैयार हो। इसी प्रकार यदि उसे कपड़ों की आवश्यकता हो तो वह जुलाहे के पास जाएगा, जो गेहूं के बदले कपड़ा देने को तैयार हो। इसलिए किसान को पहले एक गोदाम का निर्माण करना पड़ेगा, जिसमें वह अपना गेहूं रख सके, ताकि आवश्यकता के समय अपनी इच्छित वस्तुओं

का आदान-प्रदान कर सके। लेकिन सभ्यता के आरंभिक दिनों में गोदाम का निर्माण और उसका रख-रखाव बहुत कठिन काम था।

6. मूल्य ह्रास : अंत में वस्तु विनिमय प्रणाली की मुख्य समस्या यह है कि लंबे समय तक संग्रह के कारण वस्तु की मौलिक गुणवत्ता और उसका मूल्य कम हो जाता है। कई वस्तुएं, जैसे–नमक, फल, सब्जी आदि नाशवान होती हैं। इसलिए इन वस्तुओं को भविष्य में व्यापार के लिए स्वीकार नहीं किया जाता था, क्योंकि मूल्य संचय (Store of Value) के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता था। इसी तथ्य में यह बात भी निहित है कि किसी भी वस्तु का उपयोग उधार या कर्ज देने के उद्देश्य से नहीं होता था।

उक्त समस्याओं के कारण वस्तु विनिमय प्रणाली लंबे समय तक प्रचलन में नहीं रह सकी। सभ्यता की प्रगति के साथ लोगों ने महसूस किया कि लेन-देन का कोई सर्वमान्य माध्यम होना चाहिए, जो आसानी से लाया-ले जाया जाए, जिसका संग्रह किया जा सके और जो किसी वस्तु के मूल्य को व्यक्त करने में उपयोग किया जा सके। इस प्रकार मुद्रा का जन्म हुआ। इस प्रकार वस्तु-विनिमय प्रणाली की विफलता के कारण, मुद्रा की आवश्यकता प्रतीत हुई।

पाठगत प्रश्न 28.1

1. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही उत्तर को टिक ( ) कीजिए–

(अ) वस्तु विनिमय प्रणाली में सिक्कों के बदले वस्तुओं का लेन-देन होता था।
(सत्य या असत्य)

(ब) सिमरन, कविता से 6 पैंसिलों के बदले एक नोटबुक लेना चाहती है। कविता को यह मंजूर नहीं। यह समस्या आवश्यकताओं के दोहरे संयोग की कमी से संबंधित है।
(सत्य या असत्य)

2. पिछले साल अहमद ने असगर से 10 किलो चावल उधार लिया। अब वह इसे वापस करना चाहता है, लेकिन असगर को यह स्वीकार नहीं। इसका एक संभावित कारण दीजिए।

28.2 मुद्रा का अर्थ

विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से मुद्रा को परिभाषित किया है, लेकिन मुद्रा की सर्वमान्य परिभाषा को मुद्रा के सभी कार्यों के संदर्भ में व्यक्त किया जा सकता है–

कोई भी वह वस्तु मुद्रा है, जिसे सामान्यत: विनिमय के माध्यम मूल्य के मापक, मूल्य संग्रह तथा स्थगित भगुतानों के मानक के रूप में स्वीकार किया जाता है।

28.3 मुद्रा के कार्य

मुद्रा के प्रयोग ने वस्तु विनिमय प्रणाली के दोषों को दूर कर दिया है । विस्तृत रूप में, मुद्रा के कार्यों को दो भागों में बांटा जा सकता है–प्राथमिक (आधारभूत) और गौण कार्य।

प्राथमिक या आधारभूत कार्य

(i) विनिमय का माध्यम : मुद्रा सभी वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय के माध्यम का कार्य करती है। मुद्रा के प्रयोग ने विनिमय प्रक्रिया को दो भागों में बांट कर सरल कर दिया है अर्थात् क्रय और विक्रय। इसने वस्तु विनिमय प्रणाली में व्याप्त वस्तुओं के दोहरे संयोग की कठिनाई को दूर कर दिया है। आधुनिक विश्व में मुद्रा के प्रयोग के बिना वस्तुओं के विनिमय के प्रमाण हमें नहीं कठिनाई से ही मिलते हैं।

उदाहरण–आप एक पैन को खरीदने के लिए 10 रुपये का भुगतान करते हैं। विक्रेता एक पैन बेचकर आपसे 10 रुपये प्राप्त करता है। इस प्रकार एक पैन का 10 रुपये में विनिमय होता है।

(ii) मूल्य की मापक : वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को कीमत के रूप में मापने में मुद्रा सहायक है। मुद्रा के प्रयोग ने यह असमंजस दूर कर दिया है कि किसी एक वस्तु का मूल्य दूसरी वस्तु के कितने मूल्य के बराबर है। मुद्रा के इस काम में विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं की विनिमय प्रक्रिया को आसान कर दिया है। वस्तु की क्रय की गई मात्रा को उसकी कीमत से गुणा करने पर वस्तु का मूल्य निश्चित किया जाता है। चूंकि कीमत मौद्रिक इकाई में व्यक्त की जाती है, इस कारण वस्तु का मूल्य भी मौद्रिक रूपों में ही व्यक्त किया जाता है।

उदाहरण–माना चावल की कीमत 20 रुपये प्रति कि.ग्रा. है। एक बैग में 25 कि.ग्रा. चावल है। इस प्रकार चावल के बैग का मूल्य रुपये $20 \times 25 = 500$ है

गौण कार्य :

(i) मूल्य या धान का संग्रह : धन संग्रह का सबसे सस्ता और सुविधाजनक साधन मुद्रा है। जिसके मूल्य में समय के साथ शीघ्रता से कीमत कमी नहीं आती। इस प्रकार यह धन या मूल्य के संग्रह का सर्वमान्य साधन है। विनिमय के माध्यम के रूप में आप वस्तुओं को खरीदने के लिए मुद्रा का प्रयोग कर सकते हैं। इसका अर्थ है, यदि आपके पास मुद्रा है तो आपके पास वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने की शक्ति है। अतः मुद्रा में क्रय शक्ति है। उस क्रय शक्ति में वस्तु का मूल्य निहित है। इससे स्पष्ट है कि जो मुद्रा आपके पास है, उसमें अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी वस्तु का मूल्य संग्रहित है। इसी प्रकार जब आप उसे बेचते हैं वस्तु के विक्रेता के रूप में आप अपनी वस्तु का मूल्य भी वापस प्राप्त कर सकते हैं,

उदाहरण–हरप्रीत ने किसी क्रेता को 2500 रुपये में फर्नीचर बेचा। इसका अर्थ है कि 2500 रुपये के मूल्य का विनिमय हुआ। क्रेता, जिसने 2500 रुपये का फर्नीचर खरीदा, के पास 2500 रुपये के मूल्य देने की शक्ति है। 2500 रुपये में जो हरप्रीत को क्रेता के रूप में मिले, उसमें मुद्रा का मूल्य संग्रहिता था। हरप्रीत के लिए फर्नीचर का संग्रहण संभव नहीं होता, लेकिन निश्चित रूप से वह मुद्रा को जमा रख सकती है, जो उसे 2500 रुपये के रूप में वापस मिलती है।

(ii) स्थगित भुगतानों का मानक : स्थगित भुगतान वह होते हैं, भविष्य में देने का वादा किया जाता है। मुद्रा स्थगित भुगतान का साधन है, क्योंकि इसमें सामान्य स्वीकार्यता है। इसका मूल्य तुलनात्मक दृष्टि से स्थिर रहता है और यह वस्तुओं की तुलना में टिकाऊ होती है। ऋण

और उधार में भी भविष्य में भुगतान के लिए मुद्रा को ही स्वीकार किया जाता है। समय बीतने के साथ वस्तुओं की कीमत घट जाती है और आवश्यकताओं के दोहरे संयोग के अभाव कारण भविष्य में ऋणों के निबटान में वस्तुओं स्वीकार नहीं होती हैं।

(iii) मूल्य का स्थानांतरण : मुद्रा का यह कार्य मुद्रा के मूल्य संग्रह कार्य से लिया गया है। मुद्रा का प्रयोग एक स्थान से दूसरे स्थान या एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को मूल्य के स्थानांतरण के लिए किया जाता है। एक यात्री के रूप में जब आप एक स्थान से दूसरे स्थान जाते हैं तो अपने साथ रास्ते के खर्चे के लिए या जहां आप जा रहे हैं, वहां खर्च करने के लिए मुद्रा ले जाते हैं। आप बैंक के माध्यम से भी मुद्रा का स्थानांतरण कर सकते हैं। आजकल लोग अपने साथ ए.टी.एम. कार्ड ले जाते हैं और जहां यह सुविधा हो, वहां नकद पैसा निकाल लेते हैं।

मुद्रा के अन्य कार्य

(i) राष्ट्रीय आय का वितरण : उत्पादन प्रक्रिया में लगे हुए उत्पादन कारकों द्वारा आय सृजन होता है। भूमि, श्रम, पूंजी और उद्यम–ये उत्पादन के साधन हैं। उत्पादन इकाई में लगे इन साधनों में भूमि को लगान, श्रम को मजदूरी, पूंजी को ब्याज और उद्यमशीलता को लाभ प्राप्त होता है। यह ध्यान रखने की बात है कि लगान, मजदूरी, ब्याज और लाभ फर्म द्वारा मुद्रा के रूप में चुकाए जाते हैं और यही भुगतान, जो उत्पादन के साधन प्राप्त करते हैं, वह उनकी कारक आय कहलाती है। इस प्रकार आय विधि का उपयोग कर राष्ट्रीय आय की माप होती है।

(ii) मूल्य की एकरूपता और द्रव्यता : मुद्रा को सुविधानुसार एक स्थान से दूसरे स्थान लाया-ले जाया तथा छोटे-छोटे हिस्सों में बांटा जा सकता है। मुद्रा की द्रव्यता की जानकारी तब होती है, जब प्रत्येक लेन-देन में एक निश्चित मात्रा में बार-बार बैंक से पैसा निकाला जाता है। उदाहरण के लिए, आपके पिताजी के बैंक खाते में 10,000 रुपये है। आप 600 रुपये का जूता खरीदना चाहते हैं। आपके पिताजी बैंक से आपको देने के लिए पैसे निकाल सकते हैं। शेष 9,400 रुपये आपके पिताजी के खाते में जमा रहेंगे।

मुद्रा विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के मूल्यों में जो मापक इकाइयों के अंतर के कारण भौतिक रूप से अतुलनीय हैं, एकरूपता लाती है। उदाहरण के लिए, 1 कि.ग्रा. चावल और 1 लीटर तेल को नहीं जोड़ा जा सकता है, क्योंकि इनकी इकाइयां अलग-अलग हैं, लेकिन यदि इनको मुद्रा की इकाइयों के रूप में व्यक्त करें तो इन्हें जोड़ा जा सकता है। यदि 1 कि.ग्रा. चावल 25 रुपये और 1 लीटर तेल 75 रुपये गेहूं और चावल का हो तो सम्मिलित मूल्य 100 रुपये होगा।

28.4 भारत में मुद्रा पूर्ति के माप

मुद्रा पूर्ति से आशय मुद्रा की कुल मात्रा से है, जो अर्थव्यवस्था में लोगों द्वारा विभिन्न रूपों में अपने पास रखी जाती है। मुद्रा पूर्ति के मुख्य घटक, लोगों के द्वारा अपने पास रखी गई

करेंसी तथा व्यापारिक बैंकों द्वारा रखी गई निबल मांग जमाएं। भारतीय अर्थव्यवस्था में मुद्रा पूर्ति की मांग सामान्यतः निम्न रूपों में मापी जाती है–

(i) M_1 = लोगों के पास करेंसी (नोट और सिक्के) + मांग जमाएं + भारतीय रिजर्व बैंक के पास अन्य जमाएं।

(ii) M_2 = M_1 + डाक घर बचत जमाएं।

(iii) M_3 = M_1 + सभी व्यापारिक बैंकों और सहकारी बैंकों के टाइम डिपोजिटस (अंतरबैक टाइम डिपोजिटस को निकालकर)

(iv) M_4 = M_3 + पोस्ट ऑफिस बचत संगठन की कुल जमाएं (राष्ट्रीय बचत प्रमाण पत्रों NSC को निकालकर)

मुद्रा पूर्ति की उपरोक्त सभी अवधारणाओं में M_1 मुद्रा पूर्ति का संकुचित तथा M_3 मुद्रा पूर्ति का व्यापक मापक है। M_1 मुद्रा पूर्ति का सबसे महत्वपूर्ण मापक है। M_1 सबसे तरल तथा M_4 सबसे कम तरल है।

28.5 उच्च शक्ति मुद्रा (H)

उच्च शक्ति मुद्रा का आशय उस मुद्रा से है, जो लोगों द्वारा करेंसी (C), बैंकों के सुरक्षित कोष (R) तथा भारतीय रिजर्व बैंक की अन्य जमाएं के रूप में होती हैं। उच्च शक्ति मुद्रा भारतीय रिजर्व बैंक और भारत सरकार द्वारा उत्पन्न की जाती है तथा, जिसे नागरिकों और बैंकों के पास होती है

पाठगत प्रश्न 28.2

1. निम्न कथनों में कौन सत्य है तथा कौन असत्य?

   (i) मुद्रा पूर्ति को मापने का एम$_1$ संकुचित तथा एम$_3$ व्यापक माप है।

   (ii) करेंसी नोट और सिक्के मुद्रा पूर्ति के महत्वपूर्ण घटक नहीं हैं।

   (iii) मुद्रा की पूर्ति एक समयावधि में मापी जाती है।

   (iv) नागरिकों के पास कैश, बैंकों के पास जमा तथा भारतीय रिजर्व बैंक के पास अन्य जमाओं से उच्च शक्ति मुद्रा बनती है।

   (v) उच्च शक्ति मुद्रा उत्पन्न करने में सरकार की कोई भूमिका नहीं होती।

28.6 वाणिज्यिक बैंक

अर्थ : व्यापारिक बैंक एक वित्तीय संस्था है, जो मुख्य रूप से जनता में जमा राशि स्वीकार करती है और अन्य कार्यों के अलावा लोगों को ऋण देती हैं। ये बैंक निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में कार्य करते हैं। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक ऑफ इंडिया आदि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के उदाहरण हैं। एच.डी.एफ.सी. बैंक, आई.सी.आई.सी.आई. बैंक, एच.एस.बी.सी. बैंक आदि निजी क्षेत्र के बैंकों के उदाहरण हैं।

वाणिज्यिक बैंकों के कार्य

किसी अर्थव्यवस्था में वाणिज्यिक बैंक सामान्यत: निम्न कार्य करते हैं–

(i) जमा स्वीकार करना : वाणिज्यिक बैंक समाज के विभिन्न वर्गों से जमा स्वीकार करते हैं, जिनमें साधारण जनता, व्यापारिक संगठन और अन्य संस्थाएं सम्मिलित हैं। वाणिज्यिक बैंक निम्न प्रकार की जमा स्वीकार करते हैं–

(अ) चालू खाता जमाएं या मांग जमाएं : इस प्रकार के खाते सामान्यत: व्यापारिक प्रतिष्ठानों द्वारा रखे जाते हैं। इन खातों में जमा धन जमाकर्ता की मांग पर देय होता है। इस प्रकार के खाता धारक बिना किसी रोक-टोक की कितनी ही बार इन खातों में पैसा जमा कर सकते हैं अथवा निकाल सकते हैं।

(ब) बचत खाता जमाएं : इस प्रकार का खाता प्राय: गृहस्थों या व्यक्तियों द्वारा खोला जाता है। इस खाते में जमाकर्ता निश्चित बार ही पैसा जमा कर सकता है अथवा निकाल सकता है। इसमें खाते धारकों को नाममात्र दर पर ही ब्याज मिलता है।

(स) स्थिर जमा या समय जमा या सावधिक जमा : इस खाते में एक निश्चित समय अवधि के लिए पैसा जमा किया जाता है। इसमें ब्याज दर अन्य खातों की तुलना में अधिक होती है, जो जमा अवधि के समय पर निर्भर करती है।

(ii) ऋण और अग्रिम प्रदान करना : किसी वाणिज्यिक बैंक का यह दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है। यह किसी भी वाणिज्यिक बैंक की आय का महत्वपूर्ण साधन है। अपनी जमा राशि में कुछ प्रतिशत भाग सुरक्षित कोषों में रखकर अतिरिक्त बचत को ये बैंक ऋण या अग्रिम (एडवांस) के रूप में देते हैं। ऋण और अग्रिम के कुछ मुख्य रूप इस प्रकार हैं–साधारण ऋण, ओवर ड्रॉफ्ट सुविधा, विनिमय बिलों का भुनाना।

(iii) साख का सृजन : वाणिज्यिक बैंकों का यह कार्य पहले लिखे गए दो कार्यों से निकाला गया है। इस विशेष कार्य का अर्थव्यवस्था में मुद्रा पूर्ति पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

(iv) फंड्स का स्थानांतरण : यह बैंक अपने ग्राहकों को फंड स्थानांतरण की सुविधा प्रदान करते हैं। चैक, डिमांड ड्रॉफ्ट या इलेक्ट्रोनिक ट्रांसफर से एक स्थान से दूसरे स्थान या एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को यह स्थानांतरण होता है।

(v) एजेंसी कार्य : यह बैंक अपने ग्राहकों के लिए चैक, ड्रॉफ्ट, बिल, रुक्के आदि को स्वीकार करते हैं और एकत्रित करते हैं। बैंक अपने ग्राहकों के लिए सोना, चांदी तथा अन्य प्रतिभूतियों को भी खरीदते और बेचते हैं।

(vi) विदेशी विनिमय का क्रय-विक्रय : व्यापारिक बैंकों का यह एक दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है। वैश्वीकरण के दौर में बढ़ने और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लगातार बढ़ने के कारण हैं, व्यापारिक बैंकों का क्रय-विक्रय का काम तीव्र गति से बढ़ रहा है।

(vii) सामान्य उपयोगी सेवाएं : वर्तमान संदर्भ में बैंक अपने ग्राहकों और अर्थव्यवस्था के विकास के लिए कुछ और काम भी कर रहे हैं। जैसे– आंकड़ों को एकत्र करना और उनका प्रकाशन, लॉकर्स और ऋण पत्रों का जारी करना, सलाह कार्य, सरकार द्वारा निर्गमित शेयर और प्रतिभूतियों के अंडर-राइटिंग का कार्य आदि।

28.7 वाणिज्यिक बैंकों द्वारा साख का सृजन

साख का सृजन वाणिज्यिक बैंकों का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। बैंक अपने द्वारा एकत्रित जमाओं से साख का सृजन करते हैं। साख सृजन को मुद्रा का सृजन या जमा का सृजन भी कहा जाता है। इस कारण वाणिज्यिक बैंकों को मुद्रा या साख का सृजन कर्त्ता के रूप में भी जाना जाता हे।

साख/ मुद्रा सृजन की प्रक्रिया

व्यापारिक बैंकों द्वारा मुद्रा का सृजन वास्तव में नोट छापकर या सिक्के ढालकर नहीं किया जाता है। लोगों को ऋण और अग्रिम देकर तथा उधार देने वाले बैंकों के खातों में संबंध कार्रवाई कर मुद्रा का सृजन किया जाता है। बैंकों में जो राशि जमा के रूप में आती है, उसमें से ऋण दिया जाता है। बैंक जितनी राशि का ऋण देता है, वह जमा राशि से अधिक होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि जब पैसा जमा किया जाता है तो बैंक अपने अनुभव से जानता है कि सारा जमा किया गया पैसा एक साथ नहीं निकाला जाएगा। जर्मा कर्ताओं की इस विशेष आदत के कारण बैंकों के पास बड़ी मात्रा में अतिरेक राशि एकत्रित हो जाती है, जिसे यह ऋण देने में उपयोग करते हैं। बैंक अपनी जमाओं का कुछ भाग नकदी के रूपमें अपने पास रख लेता है, ताकि अपने ग्राहकों की मांग को पूरा कर सके। इसके अलावा प्रत्येक वाणिज्यिक बैंक को अपनी बचत का कुछ भाग रिजर्व बैंक के पास जमा करना पड़ता है। इसे नकद साख अनुपात (CRR) कहते हैं। सीआरआर के अलावा बैंक को कानूनी तौर पर अपनी जमाओं का कुछ भाग नकदी, सोना तथा कुछ सरकारी मान्यता प्राप्त प्रतिभूतियों जैसी तरल संपत्तियों में रखना होता है। इसे वैधानिक तरलता अनुपात (SLR) कहते हैं। सीआरआर और एसएलआर दोनों से मिलकर वैधानिक कोष अनुपात (LRR) बनता है, जो देश के केंद्रीय बैंक द्वारा निश्चित किया जाता है (भारत के संदर्भ में भारतीय रिजर्व बैंक)।

जब केंद्रीय बैंक द्वारा एलआरआर बढ़ाया जाता है तो वाणिज्यिक बैंकों की जमा अथवा साख सृजन की क्षमता कम हो जाती है और जब एलआरआर कम की जाती है तो वाणिज्यिक बैंकों

की अधिक साख सृजन क्षमता बढ़ जाती है। इस प्रकार एलआरआर और अर्थव्यवस्था में मुद्रा सृजन में विपरीत संबंध पाया जाता है। किसी समय विशेष पर दिए हुए जमाओं और सीआरआर की स्थिति में एक अर्थव्यवस्था में कुल सृजित मुद्रा की मात्रा निम्न प्रकार होगी–

कुल सृजित मुद्रा की मात्रा : जमाओं की मात्रा × 1/एलआरआर

एक उदाहरण की सहायता से हम अर्थव्यवस्था में मुद्रा या साख सृजन प्रणाली को समझते हैं–

माना कि बैंक 1000 रुपये की आरंभिक जमा प्राप्त करता है और एलआरआर 10 प्रतिशत है। इसके अर्थ हैं कि बैंक के पास रुपये 1000 – (1000 × 10 प्रतिशत) = रुपये 900 का अधिकोष है (Excess Reserve), जिसे उधार लेने वालों को ऋण के रूप में दिया जा सकता है। यह ध्यान में रखने की बात है कि ऋण लेने वालों को धनराशि का भुगतान नकद में नहीं किया जाता, वरन् इसे उनके खाते में क्रेडिट किया जाता है। इस प्रकार पहले चक्र में रुपये 900 की अतिरिक्त जमा का सृजन हुआ, इसमें से बैंक रुपये 900 – (900 × 10 प्रतिशत) = 810 रुपये का ऋण देने के लिए स्वतंत्र है। दूसरे चक्र में रुपये 810 का अतिरिक्त जमा का सृजन हुआ और अर्थव्यवस्था में कुल मुद्रा की पूर्ति = 1000 + 900 + 810 = 2710 रुपये हो गई। यदि यह क्रम चलता रहे तो अर्थव्यवस्था में आरंभ की 1000 रुपये की जमा राशि से–

1000 × 1/10 प्रतिशत = 1000 × 1/0.1 = 1000 × 10 = 10000 (दस हजार)

की मुद्रा का सृजन हो जाएगा। यदि एलआरआर की राशि 20 प्रतिशत है तो अर्थव्यवस्था में आरंभ की 1000 रुपये की जमा से रुपये 1000 × 1/0.2 = 5000 मुद्रा का सृजन होगा। इस प्रकार एलआरआर की ऊंची दर अर्थव्यवस्था में कम मात्रा में मुद्रा का सृजन करेगी और एलआरआर की नीची दर अर्थव्यवस्था में अधिक मात्रा में मुद्रा का सृजन करेगी।

ध्यान देने की बात यह है कि दो कारणों से बैंक अपनी जमाओं का केवल कुछ ही भाग नकद कोष में रखते हैं। प्रथम, बैंक अपने अपने अनुभव के आधार से यह जानते हैं कि सभी जमाकर्ता एक ही समय पर अपना पैसा नहीं निकालेंगे और अतिरेक द्रव्य को अतिरिक्त ऋण देने और जमा सृजन में उपयोग किया जा सकता है। द्वितीय, बैंकों में जमाओं का सतत प्रवाह रहता है और वे अपने नकद कोषों से निश्चिंत रहते हैं।

पाठगत प्रश्न 28.3

निम्न कथनों में कौन सत्य है और कौन असत्य?

(i) वाणिज्यिक बैंकों को सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा नियंत्रित और संचालित किया जाता है।

(ii) बचत खाता जमाओं पर ब्याज दर निश्चित जमाओं से कम होती है।

(iii) आधुनिक अर्थव्यवस्था में वाणिज्यिक बैंकों के कार्य दिन-पर-दिन बढ़ते जा रहे हैं।

(iv) लोगों को ओवर ड्रॉफ्ट सुविधा से ऋण सुलभ कराना बैंकों का जनता को ऋण प्रदान करने काएक महत्वपूर्ण तरीका है।

(v) वैधानिक जमा अनुपात (LRR) में वृद्धि से बैंकों की साख सृजन की क्षमता कम हो जाती है।

28.8 केंद्रीय बैंक

केंद्रीय बैंक किसी अर्थव्यवस्था में एक शिखर बैंक होता है, जो मौद्रिक नीति के निर्माण अरौ क्रियान्वयन को सम्मिलित करते हुए समस्त बैंकिंग कार्यकलापों के नियंत्रण, नियमन और निरीक्षण का कार्य करता है। भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) भारत का केंद्रीय बैंक है।

केंद्रीय बैंक के कार्य

(i) करेंसी नोटों के निगर्मन का काम : किसी भी अर्थव्यवस्था में केंद्रीय बैंक ही नोट निर्गम करने वाली अकेली संस्था होती है। नोटों के पीछे केंद्रीय बैंक के पास सोना, संपत्तियों का न्यूनतम कोष जैसे सोना, सोने के सिक्के और विदेशी विनिमय आदि रखा जाता है। भारत में न्यूनतम कोष प्रणाली के आधार पर, न्यूनतम 200 करोड़ रुपये की राशि कोश में रखी जाती है। इसमें से 115 करोड़ रुपये की कीमत का सोना तथा 85 करोड़ रुपये का विदेशी विनिमय प्रतिभूतियां रिजर्व बैंक के पास रखा जाती हैं। करेंसी निगर्मन की एक ही संस्था होने के कुछ लाभ हैं, जैसे–करेंसी में एकरूपता, उत्तम निरीक्षण और मुद्रा पूर्ति पर नियंत्रण तथा मुद्रा निर्गमन और चलन में जनता का विश्वास।

(ii) बैंकों का बैंक : केंद्रीय बैंक निम्न प्रकार से सभी वाणिज्यिक बैंकों का बैंक है–

- वाणिज्यिक बैंकों के नकद कोषों का अभिरक्षक (सी.आर.आर.)
- अंतिम शरणदाता : यदि वाणिज्यिक बैंक अपने साधनों से पर्याप्त नकद मुद्रा की व्यवस्था नहीं कर पाती हैं तो वह अंतिम सहायता के लिए, केंद्रीय बैंक के पास जाते हैं, जो जरूरतमंद बैंको को ऋण प्रदान करते हैं।
- केंद्रीय बैंक सभी वाणिज्यिक बैंकों के लिए केंद्रीय समाशोधन गृह का भी कार्य करता है।

(iii) सरकार का बैंकर : सरकार का बैंकर होने के कारण केंद्रीय बैंक भारत सरकार और राज्य सरकारों के लिए सभी बैंकिंग कार्यकलाप करता है। यह सरकार के नकद कोषों तथा प्राप्त भुगतानों के रखने के लिए सरकार के चालू खाते है। यह सरकार को ऋण और अग्रिम भी उपलब्ध कराता है। यह सरकार के वित्तीय सलाहकार का भी काम करता है।

(iv) सरकार के स्वर्ण भंडार और विदेशी विनिमय कोष का संरक्षक : सरकार के द्वारा निश्चित विनिमय दर में स्थिरता लाने में भी केंद्रीय बैंक सहायता करता है। अर्थव्यवस्था में

अनुकूल भुगतान, संतुलन और विनिमय नियंत्रण बनाए रखने के लिए केंद्रीय बैंक उपयुक्त नियमों को लागू करता है।

(v) मुद्रा पूर्ति और साख का नियंत्रक : साख नियंत्रण और मुद्रा की पूर्ति में नियंत्रण शायद केंद्रीय बैंक का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। साख नियंत्रण के विभिन्न तरीकों से केंद्रीय बैंक अर्थव्यवस्था में विकास और स्थिरता की स्थिति लाने का प्रयत्न करता है। साख नियंत्रण के सभी तरीकों को निम्न दो भागों में बांटा जा सकता है। इन्हें मुद्रा नीति के उपकरण कहा जाता है।

केंद्रीय बैंक द्वारा अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पूर्ति और साख को नियंत्रित तथा नियमित करने संबंधी नीति को मौद्रिक नीति कहा जाता है।

(A) साख नियंत्रण की परिमाणात्मक विधियां

(B) साख नियंत्रण की गुणात्मक या चयनात्मक विधियां

परिमाणात्मक विधियां समूची साख प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं और अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों पर अपना प्रभाव डालती हैं। इनमें निम्न को सम्मिलित किया जाता है–

(i) बैंक दर नीति : बैंक दर, वह दर है, जिस पर केंद्रीय बैंक व्यापारिक बैंकों को ऋण प्रदान करता है। बैंक दर में वृद्धि से व्यापारिक बैंकों के कोषों की लागत में वृद्धि होती है, जिसका भार उनके द्वारा ग्राहकों पर डाल दिया जाता है। ऊंची ब्याज दर से ऋण की मांग कम हो जाती है। इस प्रकार मुद्रा/ साख की मांग कम होने के कारण अर्थव्यवस्था में कुल मांग भी कम हो जाती है। अर्थव्यवस्था में मुद्रा स्फीति को रोकने के लिए बैंक दर बढ़ाई जाती है और मुद्रा संकुचन की स्थिति से लड़ने के लिए बैंक दर को कम किया जाता है।

(ii) खुले बाजार की क्रियाएं : खुले बाजार की क्रियाओं का अर्थ है, केंद्रीय बैंक द्वारा खुले बाजार में सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय। केंद्रीय बैंक इन प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय नागरिकों तथा वाणिज्यिक बैंकों से/ को करता है। यदि केंद्रीय बैंक मुद्रा स्फीति को रोकना चाहता है तो यह बाजार में प्रतिभूतियों को बेचता है, ताकि अतिरिक्त द्रव्यता का लोगों से केंद्रीय बैंकों को स्थानांतरण हो जाए। इस विधि से बाजार में कुल मांग और मुद्रा स्फीति पर नियंत्रण पाया जाता है। इसी प्रकार यह बैंक कुल मांग को बढ़ाने और मुद्रा संकुचन से लड़ने के लिए प्रतिभूतियों को खरीदना शुरू कर देता है।

(iii) परिवर्तननीय वैधानिक कोष अनुपात : कंद्रीय बैंक व्यापारिक बैंकों की सीआरआर और एसएलआर में परिवर्तन कर बैंकों की साख सृजन क्षमता को प्रभावित कर सकता है। एलआरआर में वृद्धि से व्यापारिक बैंकों की साख सृजन क्षमता कम होती है और एलआरआर में कमी करने से व्यापारिक बैंकों की साख सृजन क्षमता बढ़ती है। एलआरआर स्फीति की स्थिति में बढ़ाया जाता है और मुद्रा संकुचन की स्थिति में घटाया जाता है।

गुणात्मक या चयनात्मक साख नियंत्रण मुद्रा/ साख को पूर्णतः प्रभावित नहीं करता है। यह साख को किसी विशेष उपयोग में दिशा देता है। साख की गुणात्मक नियंत्रण विधियां निम्नवत हैं–

(i) सीमा अनिवार्यता (Margin Requirement) : व्यापारिक बैंक ऋण लेने वालों को कुछ आनुषांगिक प्रतिभूतियों के बदले ऋण स्वीकार करते हैं। जिनका मूल्य स्वीकृत ऋण से अधिक होता है। मूल्यों के इस अंतर को सीमा कहा जाता है। इस सीमा में वृद्धि ऋण लेने वाले की ऋण पात्रता में कमी लाती है। केंद्रीय बैंक इस विधि का प्रयोग मुद्रा स्फीति के समय करता है। मुद्रा संकुचन की स्थिति में सीमा आवश्यकता कम कर की जाती हैं, ताकि अर्थव्यवस्था में मुद्रा/ साख की पूर्ति में वृद्धि हो सके।

(ii) नैतिक सलाह : इस विधि में केंद्रीय बैंक वाणिज्यिक को ऐसी साख नीति अपनाने के लिए सलाह देता है और दबाव डालता है, जो अर्थव्यवस्था के पूर्ण उद्देश्यों के अनुकूल हो।

(iii) साख का राशनिंग : इस विधि में केंद्रीय बैंक व्यापारिक बैंकों को ऋण देने की अधिकतम सीमाएं निर्धारित करता है। यह सीमा या तो किसी उपयोग विशेष के लिए अथवा सामूहिक (Aggregate) आधार पर तय की जाती है। ब्याज की दर अलग-अलग क्षेत्रों या उपयोगों के लिए भिन्न हो सकती है।

पाठगत प्रश्न 28.4

1. निम्न कथनों में से कौन सत्य है और कौन असत्य है–

   (i) केंद्रीय बैंक किसी भी अर्थव्यवस्था में एक सर्वोच्च संस्था है।

   (ii) व्यापारिक बैंकों के नियंत्रण और नियमन में केंद्रीय बैंक की भूमिका बहुत कम है।

   (iii) केंद्रीय बैंक सरकार के बैंकर का काम करता है।

   (iv) किसी अर्थव्यवस्था में मुद्रा पूर्ति के नियंत्रण और नियमन में केंद्रीय बैंक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

   (v) साख नियंत्रण की परिमाणात्मक विधि किसी अर्थव्यवस्था में मुद्रा की संपूर्ण पूर्ति को प्रभावित करती है।

   (vi) बैंक दर में वृद्धि अर्थव्यवस्था में मुद्रा पूर्ति को कम करती है।

   (vii) मुद्रा स्फीति की स्थिति केंद्रीय बैंक में बैंक दर को बढ़ाता है और मुद्रा संकुचन की स्थिति में बैंक दर को घटाता है।

   (viii) मुद्रा स्फीति की स्थिति में केंद्रीय बैंक बाजार में प्रतिभूतियों को खरीदना शुरू कर देता है।

   (ix) साख नियंत्रण के चयनात्मक उपाय मुद्रा की पूर्ति को अर्थव्यवस्था के कुछ ही क्षेत्रों में प्रभावित करते हैं।

   (x) साख का राशनिंग चयनात्मक साख नियंत्रण का महत्वपूर्ण रूप है।

आपने क्या सीखा है

- वस्तु विनिमय प्रणाली विनिमय का एक ऐसी प्रणाली है, जिसमें बिना मुद्रा के प्रयोग के वस्तुओं से वस्तुओं की अदला-बदली होती है।
- वस्तु विनिमय प्रणाली में कई कठिनाइयां थीं, जैसे–आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का अभाव, सर्वमान्य मूल्य मापक का अभाव, स्थगित अथवा भविष्य में भुगतान के मानक का अभाव तथा संपत्ति के संग्रहण में कठिनाई और बर्बादी।
- मुद्रा ऐसी वस्तु है, जिसे विनिमय के माध्यम के रूप में सामान्यत: स्वीकार किया जाता है।
- मुद्रा मूल्य के भंडारण के मापक तथा भविष्य के भुगतान के मानक का भी काम करती है।
- मुद्रा पूर्ति के चार मापक हैं–M_1, M_2, M_3 और M_4, जिनमें M_1 मुद्रा पूर्ति का संकुचित मापक है और M_3 मुद्रा पूर्ति का व्यापक मापक।
- उच्च शक्ति मुद्रा लोगों के पास मुद्रा (C), बैंकों की नकद जमाएं (R) तथा भारतीय रिजर्व की अन्य जमा राशियां हैं।
- वाणिज्यिक बैंक एक वित्तीय संस्था है, जो साधारणत: लोगों की जमा स्वीकार करता है और ऋण प्रदान करता है।
- वाणिज्यिक बैंकों के मुख्य कार्यों में जमा स्वीकार करना, ऋण और उधार देना, साख का सृजन तथा विदेशी विनिमय का क्रय-विक्रय सम्मिलित हैं।
- ऊंचा एलआरआर व्यापारिक बैंकों की साख सृजन क्षमता को कम करता है और नीचा एलआरआर साख सृजन क्षमता को अधिक करता है।
- मुद्रा सृजन का कुल परिमाण : जमाओं की मात्रा $\times$ 1/LRR
- केंद्रीय बैंक किसी अर्थव्यवस्था की सर्वोच्च संस्था है, जिसका काम सभी बैंकों (व्यापारिक) के कार्यकलापों का नियंत्रण, नियमन और निरीक्षण करना है।
- केंद्रीय बैंक के मुख्य कार्य हैं–साख नियंत्रण, करेंसी का निर्गमन, बैंकों का बैंक, वाणिज्यिक बैंकों की नगद कोषों का अभिरक्षक और अंतिम शरणदाता।
- केंद्रीय बैंक अन्य व्यापारिक बैंकों के केंद्रीय समाशोधन गृह का काम भी करता है। सरकार का बैंकर, राष्ट्र की स्वर्ण, विदेशी विनिमय जमा राशि आदि धरोहर का संरक्षक, साख और मुद्रा पूर्ति का नियंत्रक।
- केंद्रीय बैंक साख सामान्यता नियंत्रण के दो उपकरणों का प्रयोग करता है–परिमाणात्मक विधियां तथा गुणात्मक या चयनात्मक विधियां।
- परिमाणात्मक विधि में बैंक दर नीति, खुले बाजार की क्रियाएं और परिवर्तनशील एलआरआर सम्मिलित हैं।
- गुणात्मक या चयनात्मक साख नियंत्रण विधि में सीमा आवश्यकता, नैतिक सलाह और साख का राशनिंग सम्मिलित हैं।

पाठांत अभ्यास

1. वस्तु विनिमय प्रणाली क्या है?
2. वस्तु विनिमय प्रणाली की क्या-क्या कठिनाइयां हैं?
3. मुद्रा को परिभाषित कीजिए।
4. वस्तु विनिमय की कठिनाइयों को मुद्रा कैसे हल करती है?
5. मुद्रा पूर्ति के विभिन्न मापकों की व्याख्या कीजिए।
6. वाणिज्यिक बैंक क्या है?
7. वाणिज्यिक बैंकों के मुख्य कार्यों की व्याख्या कीजिए।
8. वाणिज्यिक बैंक किन-किन प्रकार की जमाओं को स्वीकार करते हैं?
9. साख सृजन क्या है?
10. मुद्रा/ साख सृजन की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।
11. उच्च शक्ति मुद्रा क्या है?
12. केंद्रीय बैंक क्या है?
13. केंद्रीय बैंक के मुख्य कार्य क्या हैं?
14. साख नियंत्रण की परिमाणात्मक तथा गुणात्मक विधियों में भेद कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

28.1

(i) असत्य (ii) सत्य (iii) चावल की गुणवत्ता कम/ रुचि का अभाव

28.2

(i) सत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) सत्य (v) सत्य

28.3

(i) असत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) सत्य (v) सत्य

28.4

(i) सत्य (ii) असत्य (iii) सत्य (iv) सत्य (v) सत्य

(vi) सत्य (vii) सत्य (viii) असत्य (xi) सत्य (x) सत्य